

तपस्या का प्रारूप क्या हो

हम सभी का जीवन, ईश्वरीय संतानों का जीवन, ब्राह्मण बनने के बाद का जीवन और उसका पैमाना, उसका मापदंड क्या हो सकता है? और क्या होना चाहिए? तो बहुत गहन दृष्टि से, गहन भाव से अगर उसको देखा जाये तो हम पायेंगे कि जो हमारा लक्ष्य ईश्वरीय जीवन मिलने के पहले नहीं था, जो ईश्वरीय जीवन मिलने के बाद हमको लक्ष्य मिला, उन दोनों के बीच में कितना गैप है, कितना बड़ा अंतर है। हम सभी यहाँ पर सबकुछ छोड़ना चाहते हैं, और कहा जाता है कि एक-एक चीज से लगाव हमारे दुःख का कारण है और उसको छोड़ने का, हटाने का तरीका परमात्मा ने हमको सिखाया कि निमित्तपन का भाव लाओ। निमित्तपन की स्थिति बनाओ। लेकिन निमित्तपन का भाव, निमित्तपन की स्थिति लाने के लिए हम सबका जो अटेन्शन है वो बहुत कम है। कारण उसका एक है कि जो प्राप्ति हमको अपनी उस जीवन में नहीं हुई, वो यहाँ होने लगीं। होने लगीं तो हम धीरे-धीरे इस ज्ञान को उसमें यूज करने लगे, कि नहीं, जीने के लिए ये भी तो चाहिए, ये भी तो चाहिए, ये भी तो जरूरी है। क्योंकि अगर हम ऐसे नहीं रहेंगे तो सेवा



कैसे करेंगे? कार्य कैसे करेंगे? तो कहने का मतलब ये हुआ कि जो चीज हम करने आये थे उससे धीरे-धीरे हमारा मोह किसी ओर की तरफ मुड़ गया।

आप सोचो कि परमात्मा हमको कर्मातीत बनाना चाहते हैं। कर्म करके भूलना सिखाते हैं कि आप कर्म करके भूलोगे तो खुश रहोगे। इच्छाओं को कम करोगे तो समस्याएं ऐसे ही कम हो

जायेंगी। बहुत सारी बातें ऐसी छोटी-छोटी बाबा हमको सिखाते हैं। लेकिन ये सारी बातें एक साइड में और उलझन बढ़ती जा रही है। और हम सबका जीवन भी ना डबल जीवन है, डबल जीवन का मतलब? क्योंकि एक ट्रेनिंग तो मिल ही गई है कि हमको खुश रहना है सबके सामने। मुस्कुराहट के साथ बोलना है, मिठास के साथ बोलना है, ये एक ट्रेनिंग

है, उन्नति नहीं है। ये हमारा नेचर नहीं बना है। तभी तो हम बीच-बीच में काफी देर तक इस भाव को रख नहीं पाते। जब रख नहीं पाते तो दुबारा कहते हैं कि हमको पुरुषार्थ और करना है।

तो परमात्मा कहते हैं कि तपस्या इसी बात की तो है। ये कितना जड़ तक मैंने इन सारी चीजों को जीता है। तो हम सबको बैठ करके या खड़े होकर या चल-फिर कर या किसी भी तरह से मनन-चिंतन करके इन बातों से बाहर खुद को निकालना है कि हम सबके अन्दर निष्काम कर्मयोगी वाला भाव कब तक आयेगा? क्योंकि हम संगमयुग पर हर चीज परमात्मा से मांगते हैं कि हमारा ये अच्छा हो, ये अच्छा हो, ये अच्छा हो। और हमारे आत्मबल से वो अच्छा हो ही रहा है, हो जाता है। क्योंकि हम सब भी तो आत्माएं परमात्मा की संतान हैं, जो संकल्प करेंगे वो तो होना ही है। लेकिन जो संकल्प हमको करना चाहिए वो साइड में है। हमको ये करना है कि हम निष्काम कर्मयोगी बनें, कर्म करके भूलें, उन संकल्पों में तो एक बार भी ध्यान नहीं है। तो ये सिर्फ और सिर्फ खुद को तसल्ली देने के लिए लेकिन खुद पर काम करने के लिए जरूरी है कि हम थोड़ा जगें और थोड़ा बैठकर सोचें कि अभी तक वो सन्तुष्टि, वो खुशी क्यों नहीं है! क्योंकि जो चीज हमको करनी है, निष्काम कर्मयोगी वाली भावना लानी है, वो भूल गई है। छुपाना, ऊपर-नीचे

करना, झूठ बोलना, इधर-उधर करना, सही किसी से नहीं रहना, डबल फेस, बहुत कुछ है जो दुनिया में भी है। वहाँ तो लोग अलर्ट हैं लेकिन यहाँ पर हम सबके आपस में अन्दर-अन्दर जो सोच है, संकल्प हैं वो मिलते नहीं हैं तो उसका रिजल तो यही है, उसका कारण तो यही है कि अन्दर के वातावरण में बाहर के वातावरण के साथ हार्मनी नहीं है। इसीलिए सबके साथ वो वाले सम्बन्ध नहीं हैं, सच्चे और साफ। हर कोई कमी महसूस कर रहा है।

तो इस बात की अगर तपस्या शुरू हो जाये कि हमको सच में निष्काम कर्मयोगी बनना है, सच में निमित्तपन के साथ जीना है, सच में कर्मातीत बनना है, सच में इन बातों से बाहर निकलना है तो वही रियल तपस्या होगी। और यही तपस्या यज्ञवत्सों ने की जो शुरू में आदि रतन बने परमात्म के बच्चे।

तो चलो इन भट्टियों में इन सारी बातों से बाहर निकलने के लिए कुछ पुरुषार्थ की चीजों को अपने जीवन में अपनाते हैं...

दिनचर्या में अटेन्शन रखें -

1. वाणी में संयमता और मधुरता हो।
2. जो चाहते हैं उसे अपने जीवन से जोड़ें।
3. सच्चाई-सफाई और सादगी को लक्ष्य बनायें।
4. इस अमूल्य जीवन को मूल्यवान बनायें।



ब्रह्मपुर-ओडिशा। ब्रह्मपुर सबजोन तत्कालीन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी की स्मृति में मधुबन से पूर्व निश्चित स्मारक प्रभु मंजूल मिलन धाम का भूमि पूजन करते हुए सबजोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी, ब्र.कु. शिव व ब्र.कु. नरसिंह, माउंट आबू, कान्फ्रेक्टर चलपति राव तथा अन्य।



समालखा-हरियाणा। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत जन-जन को जागरूक करने हेतु निकाली नशा मुक्ति रैली में उपस्थित ब्र.कु.सीमा, ब्र.कु. पूजा तथा अन्य भाई-बहनें।



कूचबिहार-पश्चिम बंगाल। अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नर्सों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संपा बहन, पुर्निमा जी, जयेंत सुपरिटेण्डेंट नर्सिंग, एम.जे.एन. हॉस्पिटल, चम्पा जी, सुपरिटेण्डेंट ऑफ नर्सिंग, आलीपुरदुदुयार हॉस्पिटल, अनिनदिता जी व पीयाली जी, सुपरिटेण्डेंट ऑफ नर्सिंग, एम.जे.एन. हॉस्पिटल तथा अन्य।



हिसार-हरियाणा। बालसमंद रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज के पीस पैलेस परिसर में हिसार के चिकित्सकों के लिए आयोजित रिफ्रेशमेंट कार्यक्रम में उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रमेश दीदी, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. महेश, ब्र.कु. प्रमोद, डॉ. रितु चोपड़ा, मेडिकल डायरेक्टर, जिंदल हॉस्पिटल, डॉ. प्रवीन मोंगा व डॉ. प्रियंका छाबड़ा, मेडिकल सुपरिटेण्डेंट, डॉ. अर्चना खन्नेजा, एच.आर. हेड तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारियों आदि की उपस्थिति रही।

खुशखबरी...

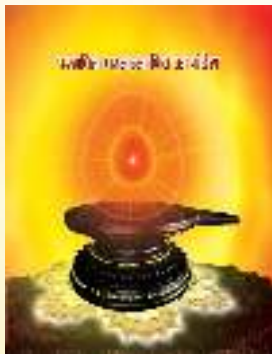
आ गई शिव संदेश और राजयोग कॉमेन्ट्री की नई कुंजी...



हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको

परमात्मा के बारे में बताया जाये, तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक

डिजाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया, शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।



ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज,
आनंद भवन, शांतिवन, आबू रोड (राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org